ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 233-235

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

भारत में सतत विकास : चुनौतियां एवं रणनीति

1. डॉ0 अर्चना श्रीवास्तव
2. डॉ0 राजीव कुमार श्रीवास्तव

1. शिक्षा शास्त्र, 2. असि० प्रोफेसर – समाजशास्त्र विभाग, श्री सुदृष्टि बाबा पी० जी० कालेज, सुदिष्टपुरी – रानीगंज, बलिया (उ0प्र0), भारत

Received-10.12.2022, Revised-16.12.2022, Accepted-20.12.2022 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांशः ***सतत विकास वह विकास है, जो भविष्य की पीढ़ियों की अपनी जरूरतों को पूरा करने की क्षमता से समझौता किए बिना वर्तमान की जरूरतों को पूरा करता है। भारत दुनिया की 16 प्रतिशत आबादी का समर्थन करते हुए दुनिया की 2.4 प्रतिशत भूमि का निर्माण करता है। जटिल परिणाम कई पीढ़ियों के लिए प्राकृतिक संसाधनों का गंभीर रूप से अस्थिर उपयोग है। वर्तमान में, भारत खतरनाक दरों पर तेजी से और व्यापक पर्यावरणीय गिरावट का सामना कर रहा है। देश की भूमि और प्राकृतिक संसाधनों पर विशाल जनसंख्या का समर्थन करने के लिए जबरदस्त दबाव डाला गया है। इस पत्र में हम सतत विकास के लिए रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो हमारी वर्तमान पीढ़ी के साथ–साथ आने वाली पीढ़ी के अस्तित्व के लिए आवश्यक हैं।***

कुंजीभूत शब्द– सतत विकास, क्षमता, आबादी, जटिल परिणाम, प्राकृतिक संसाधनों, खतरनाक, व्यापक पर्यावरणीय गिरावट।

सतत विकास की अवधारणा को कई अलग–अलग तरीकों से व्याख्या किया जा सकता है, लेकिन इसके मूल में विकास के लिए एक दृष्टिकोण है जो पर्यावरण, सामाजिक और आर्थिक सीमाओं के बारे में जागरूकता के खिलाफ अलग–अलग, और अक्सर प्रतिस्पर्धात्मक जरूरतों को संतुलित करता है, जिसका हम एक समाज के रूप में सामना करते हैं। बहुत बार, व्यापक या भविष्य के प्रभावों पर पूरी तरह से विचार किए बिना, विकास एक विशेष आवश्यकता से प्रेरित होता है। हम पहले से ही देख रहे हैं कि गैर–जिम्मेदार बैंकिंग के कारण बड़े पैमाने पर वित्तीय संकट से लेकर जीवाश्म ईंधन–आधारित ऊर्जा स्रोतों पर हमारी निर्भरता के परिणामस्वरूप वैश्विक जलवायु में परिवर्तन तक, इस तरह के दृष्टिकोण से नुकसान हो सकता है। हम जितने लंबे समय तक अस्थिर विकास का पीछा करते हैं, उसके परिणाम उतने ही लगातार और गंभीर होने की संभावना है, यही कारण है कि हमें अभी कार्रवाई करने की आवश्यकता है।

पर्यावरणीय विचार भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग रहे हैं और नियोजन प्रक्रिया में तेजी से एकीकृत हुए हैं। यह हमारे संवैधानिक, विधायी और नीतिगत ढांचे के साथ–साथ अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं में भी परिलक्षित होता है। सरकार मानती है कि इन प्रशंसनीय उद्देश्यों पर चिंता का बादल छा गया है। भारत सरकार इन चुनौतियों से अवगत है। एक उच्च और सतत आर्थिक विकास हासिल करने की कोशिश करते हुए, यह महसूस करता है कि एक अस्थिर सामाजिक और पर्यावरणीय नींव पर आर्थिक विकास को बनाए नहीं रखा जा सकता है। राष्ट्रीय दृष्टिकोण मानव कल्याण की वृद्धि को प्राथमिकता देता है जिसमें न केवल भोजन की खपत और अन्य उपभोक्ता वस्तुओं का पर्याप्त स्तर शामिल है बल्कि बुनियादी सामाजिक सेवाओं विशेष रूप से शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल और बुनियादी स्वच्छता तक पहुंच भी शामिल है। यह सभी व्यक्तियों और समूहों के लिए आर्थिक और सामाजिक अवसरों के विस्तार और निर्णय लेने में व्यापक भागीदारी को भी प्रमुखता प्रदान करता है। प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और प्रबंधन विकास रणनीति का एक महत्वपूर्ण फोकस है।

मूल रूप से, सतत विकास एक दीर्घकालिक समाधान है कि कैसे हम पर्यावरण को नुकसान पहुंचाए बिना भविष्य में अपनी अनिश्चितकालीन प्रगति की योजना बनाते हैं ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित आवास की गारंटी दी जा सके, जो अपनी अर्थव्यवस्थाओं, समाजों और देखभाल को विकसित करना जारी रखेंगे। इसी तरह के आदर्श को ध्यान में रखते हुए पर्यावरण के लिए। यह दूसरों के अवसरों को नुकसान पहुंचाए बिना हमारी जरूरतों को पूरा करता है। अवधारणा पर्यावरण, सामाजिक और आर्थिक विकास जैसे मामलों के व्यापक दायरे को शामिल करती है जो हमारे जीवन में इसके महत्व को साबित करना जारी रखता है क्योंकि यह उनके सभी पहलुओं को प्रभावित करता है। संयुक्त राष्ट्र ने भविष्य और इष्टतम सचेत विकास के लिए दिशा–निर्देशों के रूप में कार्य करने के लिए कई सतत विकास लक्ष्यों और लक्ष्यों को निर्धारित किया है।

सतत विकास की चुनौतियाँ – सतत विकास की चुनौतियाँ और उसके परिणाम स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हैं। यदि हम देखना नहीं चाहते हैं तो यह केवल अदृश्य है। सतत विकास के लिए जनसंख्या एक बड़ी चुनौती है। 21वीं सदी की शुरुआत में पृथ्वी की आबादी 6 अरब तक पहुंच गई, और अगले 50 वर्षों में 10 से 11 अरब के बीच स्तर कम होने की उम्मीद है। बुनियादी चुनौतियां पेयजल और खाद्य उत्पादन के लिए कृषि योग्य भूमि की कमी होगी। गरीबी एक और बड़ी चुनौती है क्योंकि दुनिया की लगभग 25% आबादी प्रति दिन 1 अमरीकी डालर से कम पर रहती है।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

कुपोषण से पीड़ित लोगों की संख्या के साथ असमानता सतत विकास के लिए एक गंभीर बाधा बनी हुई है। पिछले 30 वर्षों में खाद्य कीमतों में गिरावट ने खपत में वृद्धि में योगदान दिया हो सकता है, लेकिन दुनिया के कई क्षेत्रों में कृषि योग्य इलाके सीमित हैं, और नए के निर्माण से शेष पारिस्थितिक तंत्र पर विनाशकारी प्रभाव पड़ता है। भविष्य में खाद्य उत्पादन का विकास प्रकृति की कीमत पर नहीं होना चाहिए। 2010 तक जैव विविधता के नुकसान के मौजूदा कदम को काफी धीमा कर दिया जाना चाहिए। दुनिया के कई क्षेत्रों में पीने के पानी की कमी सतत विकास के लिए एक प्रमुख बाधा है। वर्ष 2025। मानव स्वास्थ्य भी सतत विकास में बाधक है। कई मामलों में, विकासशील देशों में मौतों को टाला जा सकता है। मानवता को आने वाले वर्षों में बीमारियों के खिलाफ संघर्ष के लिए अधिक ध्यान और धन देना चाहिए। आसन्न कार्य 2015 तक पांच वर्ष से कम आयु के बच्चों में मृत्यु दर को दो–तिहाई और युवा माताओं की मृत्यु दर को 75: तक कम करना है।

सतत विकास के लिए ऊर्जा की खपत एक बड़ी चुनौती है। ऊर्जा के सभी रूपों की खपत लगातार बढ़ रही है। विश्वसनीय, टिकाऊ और पर्यावरण के अनुकूल ऊर्जा स्रोतों और सेवाओं तक पहुंच में सुधार, साथ ही ऊर्जा प्रभावशीलता के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रमों का निर्माण, अगले 10–15 वर्षों के लिए एक विशेष रूप से महत्वपूर्ण कार्य है। सतत विकास के लिए वनों की कटाई विशेष रूप से बड़ी चुनौती है। दुनिया के जंगल मुख्य रूप से कृषि के विस्तार के कारण कम हो रहे हैं। आने वाले वर्षों में, वनों की वसूली और प्रबंधन में सुधार अत्यंत महत्वपूर्ण होगा।

पेट्रोल की खपत लगातार बढ़ रही है। शिखर सम्मेलन ने विकसित देशों में ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन मानदंडों पर एक समझौते पर पहुंचने के लिए क्योटो प्रोटोकॉल के निर्णयों को महसूस करने की आवश्यकता पर बल दिया।

सतत विकास के लिए रणनीतियाँ – सतत विकास का वैचारिक अर्थ विकास प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न करना नहीं है बल्कि यह अवधारणा है कि हम अपने संसाधनों का उपयोग कैसे करें ताकि वर्तमान और भावी पीढ़ी के बीच एक अंतर–संबंध स्थापित किया जा सके। सतत विकास प्राप्त करने के लिए कई संभावित रणनीतियाँ उपयोगी हो सकती हैं। इसमें ज्यादातर स्थानीय संसाधन और स्थानीय श्रम शामिल हैं।

स्वदेशी प्रौद्योगिकियां अधिक उपयोगी, लागत प्रभावी और टिकाऊ हैं। उस क्षेत्र की प्राकृतिक परिस्थितियों को उसके घटकों के रूप में उपयोग करते हुए प्रकृति को अक्सर एक मॉडल के रूप में लिया जाता है। इस अवधारणा को "प्रकृति के साथ डिजाइन" के रूप में जाना जाता है। प्रौद्योगिकी को संसाधनों का कम उपयोग करना चाहिए और न्यूनतम अपशिष्ट का उत्पादन करना चाहिए।

कम करना, पुनः उपयोग और पुनर्चक्रण दृष्टिकोण 3–आर दृष्टिकोण संसाधनों के उपयोग को कम करने की वकालत करता है, उन्हें बार–बार उपयोग करने के बजाय इसे अपशिष्ट धारा में पारित करने और सामग्रियों को पुनर्चक्रित करने के लिए स्थिरता के लक्ष्यों को प्राप्त करने में एक लंबा रास्ता तय करता है। यह हमारे संसाधनों पर दबाव कम करने के साथ–साथ अपशिष्ट उत्पादन और प्रदूषण को कम करता है।

पर्यावरण शिक्षा और जागरूकता को बढ़ावा देना पर्यावरण शिक्षा को सभी सीखने की प्रक्रिया का केंद्र बनाने से हमारी पृथ्वी और पर्यावरण के प्रति लोगों की सोच और दृष्टिकोण को बदलने में बहुत मदद मिलेगी। स्कूल स्तर से ही विषय का परिचय देने से छोटे बच्चों में पृथ्वी से अपनेपन की भावना पैदा होगी। 'पृथ्वी की सोच' धीरे–धीरे हमारी सोच और कार्य में शामिल हो जाएगी जो हमारी जीवन शैली को टिकाऊ बनाने में बहुत मदद करेगी।

क्षमता के अनुसार संसाधनों का उपयोग कोई भी प्रणाली दीर्घकालिक आधार पर सीमित संख्या में जीवों को बनाए रख सकती है जो ज्ञात है एसिट्स वहन क्षमता। मनुष्यों के मामले में, वहन क्षमता की अवधारणा और भी जटिल हो जाती है। ऐसा इसलिए है क्योंकि अन्य जानवरों के विपरीत, मनुष्य को न केवल जीने के लिए भोजन की आवश्यकता होती है, बल्कि जीवन की गुणवत्ता को बनाए रखने के लिए बहुत सी अन्य चीजों की आवश्यकता होती है। एक प्रणाली की स्थिरता काफी हद तक प्रणाली की वहन क्षमता पर निर्भर करती है। स्थिरता प्राप्त करने के लिए सिस्टम के उपरोक्त दो गुणों के आधार पर संसाधनों का उपयोग करना बहुत महत्वपूर्ण है। उपभोग पुनर्जनन से अधिक नहीं होना चाहिए और व्यवस्था की सहन क्षमता से परे परिवर्तन नहीं होने देना चाहिए।

सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक आयामों सहित जीवन की गुणवत्ता में सुधार विकास को केवल पहले से ही संपन्न लोगों के एक वर्ग पर ध्यान केंद्रित नहीं करना चाहिए। बल्कि इसमें अमीरों और गरीबों के बीच लाभों का बंटवारा शामिल होना चाहिए। आदिवासी, जातीय लोगों और उनकी सांस्कृतिक विरासत को भी संरक्षित किया जाना चाहिए। नीति और व्यवहार में मजबूत सामुदायिक भागीदारी होनी चाहिए। जनसंख्या वृद्धि को स्थिर किया जाना चाहिए। सरकार द्वारा उठाए गए कदम भारत ने जलवायु परिवर्तन की चुनौती से निपटने के लिए अपनी रणनीति की रूपरेखा तैयार करने के लिए 30 जून,

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

2008 को जलवायु परिवर्तन पर अपनी राष्ट्रीय कार्य योजना (एनएपीसीसी) जारी की। राष्ट्रीय कार्य योजना ऐसी रणनीति की वकालत करती है जो पहले, जलवायु परिवर्तन के अनुकूलन को बढ़ावा देती है और दूसरी, भारत के विकास पथ की पारिस्थितिक स्थिरता को और बढ़ाती है। भारत की राष्ट्रीय कार्य योजना इस बात पर जोर देती है कि भारत के अधिकांश लोगों के जीवन स्तर को बढ़ाने और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों के प्रति उनकी भेद्यता को कम करने के लिए उच्च विकास दर को बनाए रखना आवश्यक है। तदनुसार, कार्य योजना उन उपायों की पहचान करती है जो भारत के सतत विकास के उद्देश्यों को बढ़ावा देते हैं और साथ ही जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने के लिए लाभ भी देते हैं। आठ राष्ट्रीय मिशन हैं जो बहु–आयामी दीर्घकालिक रणनीति का प्रतिनिधित्व करते हुए राष्ट्रीय कार्य योजना के मूल का निर्माण करते हैं। इन मिशनों को नए तैयार किए गए कार्यक्रमों के साथ चल रहे कई कार्यक्रमों को मिलाकर बनाया गया है। राष्ट्रीय सौर मिशन का दोहरा उद्देश्य है – भारत की दीर्घकालिक ऊर्जा सुरक्षा के साथ–साथ इसकी पारिस्थितिक सुरक्षा में योगदान करना। हम तेजी से घटते जीवाश्म ईंधन संसाधनों की दुनिया में रह रहे हैं और तेल, गैस और कोयले जैसे पारंपरिक ऊर्जा संसाधनों तक पहुंच तेजी से बाधित होती जा रही है। नवीकरणीय ऊर्जा का तेजी से विकास और परिनियोजन इस संदर्भ में अनिवार्य है और देश भर में उच्च सौर विकिरण को देखते हुए सौर ऊर्जा दीर्घकालिक स्थायी समाधान प्रदान करती है।

निष्कर्ष – सतत विकास एक दृष्टि और सोचने और कार्य करने का एक तरीका है ताकि हम अपनी भावी पीढ़ी के लिए संसाधनों और पर्यावरण को सुरक्षित कर सकें। यह केवल नीतियों द्वारा नहीं लाया जाएगा – इसे समाज द्वारा बड़े पैमाने पर एक सिद्धांत के रूप में लिया जाना चाहिए जो प्रत्येक नागरिक को हर दिन कई विकल्पों का मार्गदर्शन करता है, साथ ही बड़े राजनीतिक और आर्थिक फैसले जो कई लोगों को प्रभावित करते हैं। यह स्पष्ट है कि पर्यावरण क्षरण की सबसे बड़ी कीमत उन पीढ़ियों को चुकानी पड़ती है जो अभी पैदा नहीं हुई हैं। वर्तमान पीढ़ियों के संबंध में भावी पीढ़ियां वंचित हैं क्योंकि वे जीवन की एक खराब गुणवत्ता प्राप्त कर सकते हैं, वर्तमान पीढ़ी के बीच कोई आवाज और प्रतिनिधित्व नहीं होने में संरचनात्मक कमजोरी की स्थिति साझा कर सकते हैं और इसलिए उनके हितों को अक्सर वर्तमान निर्णयों और नियोजन में उपेक्षित किया जाता है जबकि यह बहुत आवश्यक है हम अपनी पीढ़ी के बारे में सोचते हैं। हम केवल सतत विकास में सुधार कर सकते हैं जब यह नागरिकों और हितधारकों को शामिल करने पर जोर देगा। अंततः, दृष्टि तभी वास्तविकता बनेगी जब हर कोई एक ऐसी दुनिया में योगदान देगा जहां आर्थिक स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय और पर्यावरण संरक्षण साथ–साथ चलते हैं, जिससे हमारी अपनी और आने वाली पीढ़ियों को अब से बेहतर बनाया जा सके।

REFERENCES

1. http://www.fsdinternational.org/country/india/envissues.
2. http://www.academia.edu/1082298/Strategies_for_Sustainable_Development_in_India_With_Special_Reference_to_Future_Generation_
3. http://www.moef.nic.in/divisions/ic/wssd/doc2/ch1.html
4. http://www.yourarticlelibrary.com/environment/5-important-measures-for-sustainabledevelopment/9912/
5. http://www.huffingtonpost.com/entry/sustainable-developmentindia_b_5602482.html?section=india.
6. http://india.gov.in/peoplegroups/community/environmentalists/combating-climatechange-and-working-towards-sustainable-development.
7. http://focusglobalreporter.com/article7.asp

*****